M.Com. IInd Semester
Paper ⇒ IVth B.

Subject:- Security Analysis and portfolio Management -

Lecture by:- Mr. Vikas Maurya
Assistant professor
Department of Commerce
Nehru Gram Bharti
(Deemed to be University)
Prayagraj

Topic:- Concept of Investment

विनियोग का अर्थ :⇒

विनियोग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें भविष्य में सम्भावित प्राप्ति के आधार पर वर्तमान में त्याग किया जाता है। विनियोग के अन्तर्गत अतिरिक्त आय कमाने के लिए कोषों का इस्तेमाल किया जाता है या उसके मूल्य में वृद्धि की जाती है।

शार्प एवं एलेक्जेंडर के अनुसार, "भावी अनिश्चित मूल्यों के लिए वर्तमान में निश्चित मूल्यों का त्याग करना ही विनियोग है।"

एफ. एमलिंग के अनुसार, "विनियोग का उद्देश्य कोषों को उच्च तथा निम्न दर पर गुणा करके उसके मूल्य में वृद्धि करना है जो इस बात पर निर्भर करता है कि विनियोग दीर्घकाल और अल्पकाल के लिए है तथा यह जोखिमपूर्ण या जोखिम-रहित विनियोग है।

Scanned with CamScanner

विनियोग की विचारधारा :=

मूल रूप से विनियोग की तीन विचारधारा है :-

(i) आर्थिक विनियोग विचारधारा :=

आर्थिक विनियोग से आशय विनियोग की गयी पूँजी में शुद्ध वृद्धि से है। अर्थात वस्तुओं और सेवाओं में इस प्रकार विनियोग करते है कि उनमें वृद्धि की जा सके।

जे. एल. हैन्सन के अनुसार, "आर्थिक सिद्धान्त में विनियोग का तात्पर्य पूंजीगत सामान के वास्तविक निर्माण से होता है। इस प्रकार नवीन यंत्र अथवा कारखाना तथा भवन निर्माण वास्तविक पूंजी निर्माण के उदाहरण है।"

(ii) साधारण विनियोग विचारधारा :⇒

एक साधारण व्यक्ति के लिए विनियोग के अन्तर्गत किसी कार्य के लिए उसकी मौद्रिक वचनबद्धता है। सामान्य व्यक्ति के लिए मुद्रा के द्वारा उपभोक्ता वस्तु को क्रय करना ही विनियोग है।

(iii) वित्तीय विनियोग विचारधारा :=

वित्तीय विनियोग से आशय वर्तमान बचत की राशि को वृद्धि करने के उद्देश्य से विनियोग करना है। वित्तीय विनियोग का अर्थ वर्तमान धनराशि को वर्तमान में विनियोग करके भविष्य में उसके बदले अधिक धनराशि प्राप्त करने से है।

संक्षेप में विनियोग का अर्थ कोषों को उसके मूल्य में वृद्धि करना है। यह विनियोग जोखिम वाला अथवा जोखिम रहित भी हो सकता है।

Scanned with CamScanner

विनियोग निर्णयों की प्रक्रिया :-

(i) विनियोग नीति का निर्धारण
(ii) विनियोग विश्लेषण
(iii) पोर्टफोलियो की रचना
(iv) पोर्टफोलियो का पुनरावलोकन
(v) पोर्टफोलियो का मूल्यांकन

Investment process विनियोग प्रक्रिया

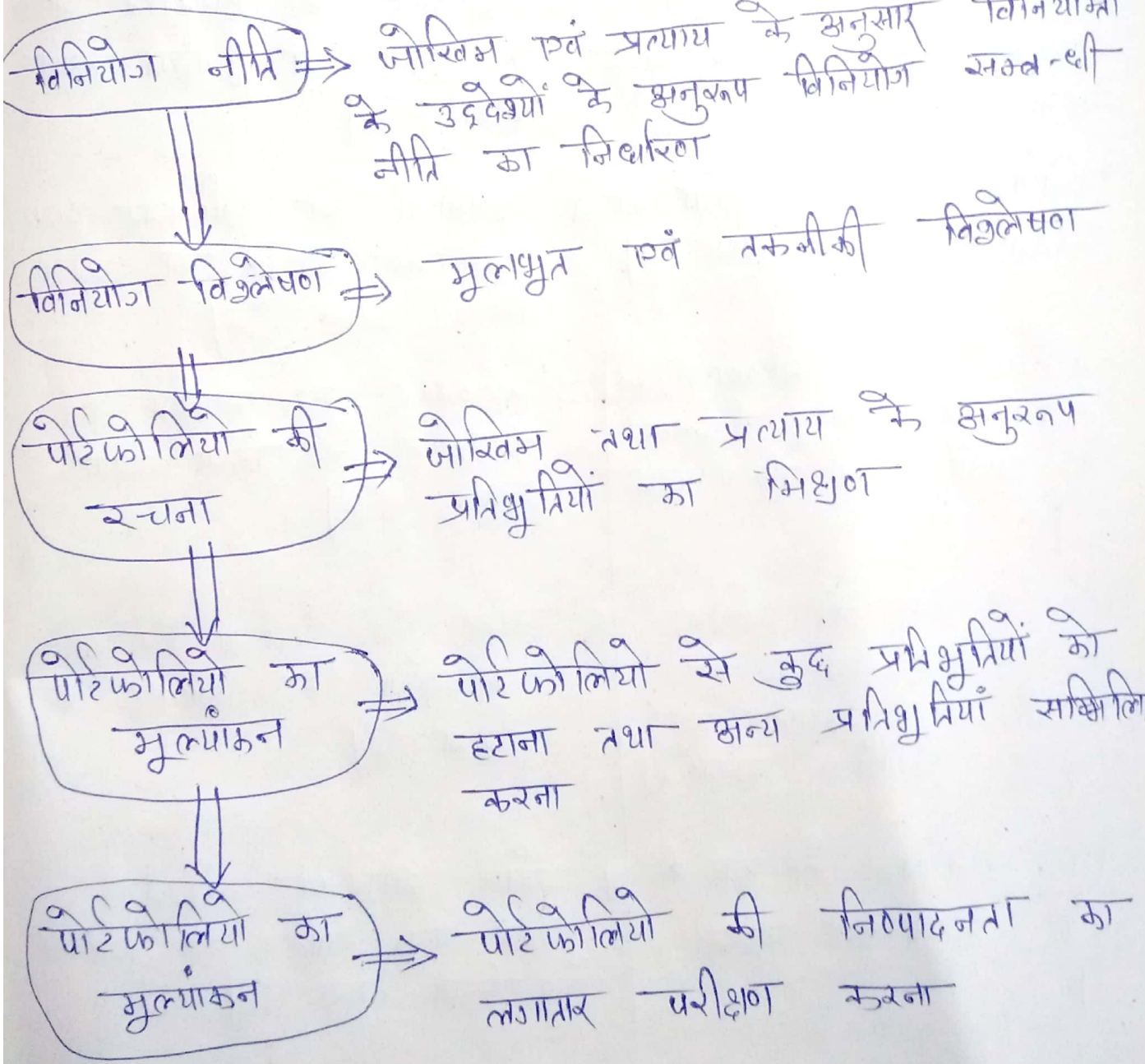

Scanned with CamScanner

विनियोग और सट्टेबाजी में अन्तर :-

विनियोग	सट्टेबाजी
1. विनियोग एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है।	1. सट्टेबाजी एक अल्पकालीन प्रक्रिया है।
2. इसमें जोखिम की मात्रा कम होती है।	2. इसमें जोखिम की मात्रा अधिक होती है।
3. विनियोग में ब्याज अथवा लाभांश की आय पर निर्भर रहना पड़ता है।	3. सट्टेबाजी के अन्तर्गत प्रत्यय के रूप में पूंजीगत लाभ होता है।
4. विनियोग में निजी कोषों का इस्तेमाल किया जाता है।	4. सट्टेबाजी में अधिकतर उधार लिए गए कोषों का इस्तेमाल किया जाता है।
5. विनियोग हमेशा सावधानीपूर्वक तथा सोच समझकर विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।	5. सट्टेबाजी एक साहसिक एवं लापरवाही से किया गया कार्य है।
6. विनियोक्ता देश की आर्थिक स्थिति तथा कम्पनी की पिछली लाभ क्षमता को देखकर विनियोग करता है।	6. सट्टे के लेनदेन केवल सूचनाओं के आधार पर होता है।
7. इसमें विनियोक्ता ठेकेदार की भाँति अनुबंध करता है।	7. इसमें अनुबंध सट्टेबाजी के लिए एक मालिक की हैसियत से किया जाता है।

Scanned with CamScanner

विनियोग और जुए में अन्तर :-

विनियोग	जुआ
1. विनियोग की प्रकृति विवेकपूर्ण विश्लेषण पर आधारित है जिसमें सामान्यतया लाभ ही होता है।	1. जुआ बिना सोचे समझे, अफवाहों के आधार पर किया जाता है।
2. विनियोग का उद्देश्य दीर्घकाल में लाभ अर्जित करके मूलधन में वृद्धि करना है।	2. जुए का उद्देश्य अफवाहों के आधार पर लेनदेन करके लाभ या हानि कमाना है।
3. विनियोगकर्ता प्रतिभूतियाँ अपने पास रखता है तथा अवधि समाप्त होने पर उन्हें देकर बढ़ा हुआ मूलधन प्राप्त करता है।	3. जुए में बिना प्रतिभूतियाँ अपने पास रखे लेनदेन होते हैं।

विनियोग की विधियाँ :-

(i) सीधे विनियोग विकल्प
(ii) अप्रत्यक्ष विनियोग विकल्प
(iii) हस्तान्तरणीय वित्तीय प्रतिभूतियाँ

(i) सीधे विनियोग विकल्प

1. स्थायी मूलधन विनियोग
(i) नगद
(ii) बचत खाता
(iii) बचत पत्र
(iv) सरकारी बॉण्ड्स
(v) सहकारी बाण्ड्स तथा ऋणपत्र

2. परिवर्तनशील मूलधन विनियोग
(i) समता अंश
(ii) पूर्वाधिकार अंश
(iii) परिवर्तनीय ऋणपत्र

3. प्रतिभूति रहित विनियोग
(i) वास्तविक सम्पत्तियाँ
(ii) बन्धक पत्र
(iii) वस्तुएँ
(iv) व्यावसायिक वस्तुएँ

Scanned with CamScanner

(ii) अप्रत्यक्ष विनियोग विकल्प

1. पेन्शन निधि
2. अविशय निधि
3. बीमा पॉलिसी
4. निवेश कम्पनियाँ
5. युनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया एवं अन्य ट्रस्ट फण्ड

(iii) हस्तान्तरणीय वित्तीय प्रतिभूतियाँ :→

1. समता अंश
2. पूर्वाधिकार अंश
3. ऋण पत्र
4. बचत पत्र
5. सरकारी प्रतिभूतियाँ
6. मुद्रा बाजार प्रतिभूतियाँ

Scanned with CamScanner